INNOVARE JOURNAL OF EDUCATION

INNOVARE ACADEMIC SCIENCES
Knowledge to Innovation

P

Vol 3. Issue 2 . 2015

ISSN: 2347-5528

Research Article

A STUDY OF TEACHER'S PROBLEMS OF PRIMARY SCHOOLS IN RURAL AREAS OF MANDSAUR DISTRICT.

JAYDEEP MAHAR

Lect. Saraswati College Of Education Mandsaur M.P. 458001 . Email:- jaydeep.panthi@gmail.com

Received:13 February 2015, Revised and Accepted:1 March 2015

ABSTRACT

प्रस्तुत शोंध में प्रश्नावली का प्रयोग शिक्षकों से उनकी समस्या को जानने का प्रयास किया गया है। प्रश्नावली मे कुल 20 प्रश्नों का समावेश किया गया है जिनकें उत्तर आपको स्वविवेकानुसार देना है।

प्राथमिक शिक्षा का शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है और इस समय ग्रामीण क्षेत्र की प्राथमिक शालाए किस प्रकार की समस्याओं से जुझ रही है यह आपसे छूपा नही है। मैनें ''मन्दसौर जिलें के ग्रामीण क्षेत्रों की शासकीय प्राथमिक शालाओं की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' नामक शोध का चयन किया है। जिससे इस सम्बन्द्ध में सही व विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त कर समस्याओं की जड़ तक पहुॅचा जा सके और समस्याओं के निदान हेतु कुछ प्रयास किये जा सके।

Keywords: ग्रामीण क्षेत्र की प्राथमिक शालाए, शिक्षक।

प्रतावना –

शाला संचालन शिक्षक एक महत्वपूर्ण कडी हैं। शिक्षक यदि अपने व्वसाय से संतुष्ट होते है तो वे न केवल सुयोग्य छात्र तैयार करते है,बल्कि राष्ट्र के भावी नागरिकों को गढने मे भी उनकी एक महत्वपूर्ण भुमिका होती हैं। शिक्षकों का वेतन, भविष्य की सुरक्षा,पदोन्नती के अवसर, कार्य का प्रकार जैसे कुछ पहलू है जो शिक्षकों को व्यवसाय के प्रति संतुष्ट या असंतुष्ट बनाते हैं। कुशल व समर्पित शिक्षक बालकों, पालकों,शाला संचालकों व उच्चाधिकारियों से सामंजस्य स्थापित कर शाला के सुचारू संचालन में अपना सहयोग देते हैं।

इस शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु आपकी सेवा में प्रश्नावली प्रस्तुत की जा रही है। शोध विषय की विश्वसनीयता एवं उपयोगिता आपके द्वारा दी गई जानकारी पर निर्भर है। अतः आपसे निवेदन है कि अपने स्वतंत्र एवं निष्पक्ष विचार व्यक्त करने की कृपा करें। आपके विचार निश्चित रूप से शोध में सहायक होने के साथ–साथ शिक्षा में सुधार हेतु किये जा रहे प्रयासों में भी सहायक होंगे। आशा हैं आप इस कार्य में सहयोग प्रदान करेगें।

विधि –

शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया जिसके अर्न्तगत मन्दसौर जिले की 30 ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों का सर्वेक्षण किया गया।

न्यादर्ष –

शिक्षा के क्षेत्र में शोध अध्ययनों की कमी को देखते हुए प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश के मन्दसौर जिले को चुना गया है। इस हेतु मन्दसौर जिले के ग्रामीण शासकीय प्राथमीक शालाओं के शिक्षकों को न्यादर्श मे सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श की संख्या

क्रमांक		प्रत्येक विद्यालय में न्यादर्श	कुल विद्यालय में न्यादर्श	कुल संख्या
1	शिक्षक	2	20×30	60
		योग 60		

इस प्रकार न्यादर्श में प्रत्येक 30 ग्रामीण प्राथमीक विधलया को लिया गया है और प्रत्येक विधयालय के विधार्थी के 2–2 शिक्षकों को लिया गया है।

वैधता –

शोध अध्ययन में समस्या से संबंधित तथ्यों व सुचनाओं को एकत्रित करते हेतू उपकरणों का निर्माण शोधार्थी द्वारा विशेषज्ञो की राय से किया गया है, यह विषय वस्तु के आधार पर वैध है।

प्रक्रिया –

प्रस्तुत शोध में प्रश्नावली का प्रयोग शक्षकों से जानकारी प्राप्त करने हेतू किया गया। प्रश्नावली में कुल 20 प्रश्नो का समावेश किया गया जिनकें उत्तर आपको स्वविवेकानुसार देना है।

प्रश्नावली में शाला का समय, शिक्षकों का समय, शिक्षको का बच्चो के प्रति व्यवहार, अभिभावको। व शिक्षको का समन्वय, मध्याह्न भोजन , शाला गणवेश , अभिभावको का शाला व शिक्षको के प्रति दृष्टिकोण आदि संबंधित प्रश्नों का समावेश किया गया है।

निर्देशः–

इस प्रश्नावली में कुछ प्रश्न दिये जा रहे है जिसका उत्तर आपको स्वविवेकानुसार देना है।

प्र.कं.	**शिक्षकों हेतु प्रश्नावली**
1 उत्तर	आप इस शाला में कब से पदस्थ है । एक वर्ष से/पॉच वर्ष से/पॉच से अधिक वर्ष से
2 उत्तर	आपके शहर से शाला अधिक दूरी पर है। हॉ/नहीं
3 उत्तर	आप शाला रोज समय पर पहुॅच जाते हो । हॉ/नहीं
4 उत्तर	आपकी शाला में आधुनिक उपकरण जैसे कम्प्यूटर टेलीविजन आदि हें । हॉ/नहीं
5 उत्तर	आपकी शाला में पर्याप्त शिक्षण सामग्री की व्यवस्था है । चार्ट/नक्शे/अन्य
6 उत्तर	आपके यहॉ शाला में आधुनिक उपकरण है तो उसका उपयोग होता है । हॉ/नहीं
7 उत्तर	आपकी शाला में विद्यार्थियों को खेल सिखाए जाते है । हॉ/नहीं
8 उत्तर	किसी भी खेल में आपके शाला से किसी भी विद्यार्थी का चयन हुआ है जिला स्तर पर/राज्य स्तर पर/अन्य स्तर पर।
9 उत्तर	आपकी शाला में खेल के अलावा और अनय प्रकार की गतिविधियॉ होती है । हॉ/नहीं
10 उत्तर	आपके अनुसर शाला में छात्रों के अनुपस्थित रहने के क्या–क्या कारण हो सकते है ।
11 उत्तर	आपकी शाला में शिक्षण सामग्री में शिक्षक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते है । चार्ट/नक्शे, प्रोजेक्टर/अन्य सामग्री
12 उत्तर	अनुपस्थित छात्रों को शाला लाने हेतु आप प्रयास करते है । हॉ/नही
13 उत्तर	आपके अनुसार प्राथमिक शालाओं की पाठ्यक्रम में और सुधार की आवश्यक्ता है। हॉ/नही
14 उत्तर	शाला के विकास में समुदाय की भागीदार पर्याप्त है । हॉ/नहीं
15 उत्तर	स्टॉफ के सभी सदस्यों का सामंजस्य ठिक है। हॉ/नहीं
16 उत्तर	आप अपने प्रधानाध्यापक के कार्य से संतुष्ट है। हॉ/नहीं
17 उत्तर	आपकी शाला में छात्रध्यापक अनुपात पर्याप्त है। हॉ/नहीं
18 उत्तर	आपके अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की प्राथमिक शालाओं में समस्याएॅ आती है। हॉ/नहीं
19 उत्तर	शाला की समस्याओं को दूर करने हेतु आपके क्या सुझाव है ।
20 उत्तर	शिक्षण को संचालित करने हेतु आपको किस प्रकार की कठिनाईयॉ आती है।

शिक्षकों की समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण

स. कं0	**विषय वस्तु**	**न्यादर्श (60) आवृत्ति**		**प्रतिशत में :**	
		हां	**नही**	**हां**	**नही**
1	शाला में पदस्थ का समय	51	09	85	15
2	शहर से शाला की दूरी	60	00	100	00
3	शाला समय पर पहूॅचना	60	00	100	00
4	शाला में आधुनिक	08	52	13	87

	उपकरण				
5	पर्याप्त शिक्षण सामग्री	50	10	83	17
6	आधुनिक उपकरण का उपयोग	57	03	95	05
7	खेल सिखाए जाते है।	59	01	98	02
8	खेल में विद्यार्थी का चयन	00	60	00	100
9	अन्य गतिविधियॉ	60	00	100	00
10	छात्रों के अनुपस्थिति के कारण	60	00	100	00
11	शिक्षण सामग्री का प्रयोग	60	00	100	00
12	छात्रों को शाला लाने हेतु प्रयास	60	00	100	00
13	पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता	60	00	100	00
14	समुदाय की भागीदारी पर्याप्त है।	55	05	92	08
15	स्टॉफ का सामंजस्य	60	00	100	00
16	प्रधानाध्यापक के कार्य से संतुष्ट	60	00	100	00
17	छात्रध्यापकों का अनुपात	47	13	78	22
18	शाला में समस्याएं	58	02	97	03
19	स्मस्या दूर करने हतु सुझाव	60	00	00	100
20	शिक्षण को संचालित करने में कठिनाईयां	06	54	10	90

सारणी संख्या – का विश्लेषण

- इस विश्लेषण से प्राप्त होता है, कि 85 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे एक वर्ष से अधिक समय से वदस्थ थे, लेकिन 15 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे पांच वर्ष से अधिक समय से पदस्थ थे।
- इस विश्लेषण से प्राप्त होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शाला 2 किमी. से अधिक दूरी पर है।
- इस के विश्लेषण से प्राप्त होता है, कि शतप्रतिशत शिक्षक 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे शाला रोज समय पर पहूच जाते है।
- इस विश्लेषण से प्राप्त होता है कि 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शाला में आधुनिक उपकरण जैसें– कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि उपकरण नही है, लेकिन अधिकांश शालाओं में रेडियों पाया गया जो केवल सूर्य नमस्कार होता है, उस दिन उसे उपयोग में लिया जाता है।
- इस विश्लेषण से प्राप्त होता है कि 83 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शाला में शिक्षण सामग्री पर्याप्त थी, 13 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शिक्षण सामग्री अपर्याप्त थी। 4 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शाला में शिक्षण सामग्री का पूर्णतया अभाव था।
- इस विश्लेषण से प्राप्त होता है, कि 95 प्रतिशत शिक्षकों ने रेडियों को ही आधुनिक उपकरण माना है, जो उसका उपयोग राष्ट्रीय त्योहारों एवं सूर्य नमस्कार के लिए होता है लेकिन 5 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उसका उपयोग नही कर पाते हैं।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 98 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शालाओं में बालसभा , सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, निबंध लेखन, वृक्षारोपण, महापुरूषों की जयंती मनाना, चित्रकला, कबडडी दौड़, क्रिकेट लांग जम्प, रस्सीकूद आदि खेल खिलाएं जाते है, और सिखाए भी जाते है, लेकिन शाला में एक खेल शिक्षक की कमी बताई गई।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार हमारी शाला मे से किसी भी विधार्थी का चयन बडे स्तर पर नही हुआ है, लेकिन कुछ शिक्षकों का कहना है, कि प्राथमिक शालाओं में विधार्थी छोटे होते है, इसलिए विद्यालय स्तर पर ही खेल खिलवा लेते है, जैसे, कबड़डी, खो–खो, क्रिकेट, रस्सीकूद आदि।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में खेल के अलावा समय–समय पर कई प्रकार की गतिविधियां होती है, जैसे– सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिता, महापुरूषों की जयंती मनाना, चित्रकला, भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता आदि गतिविधियां होती है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला में छात्रों के अनुपस्थित के कई कारण हो सकते है जैसे – बच्चों का आर्थिक कार्यो में लगना, घर पर छोटे भाई–बहनों की देखभाल, पालकों का मजदुरी के लिए भटकना आदि।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला में उपलब्ध शिक्षण सामग्री जैसे–चार्ट, नक्शें, पाठ्य पुस्तक आदि का आवश्यकतानुसार समय–समय पर उपयोग करते है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार अनुपस्थित छात्रों को शाला लाने हेतु प्रोत्साहित करते, छात्रों के अभिभावकों से मिलते है, और आवश्यकता पढ़ने पर शिक्षक विद्यार्थी के घर जाकर सम्पर्क करते है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार प्राथमिक शालाओं के पाठ्यक्रम में और सुधार की आवश्यकता है। जैसे– पाठ्यपुस्तकों में और अच्छें पेजों का उपयोग किया जाये, उनमें चित्र स्पष्ट हो आदि।

- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 92 प्रतिशत शिक्षक की राय के अनुसार शाला के विकास में समुदाय की भागीदार पर्याप्त थी, केवल 5 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला के विकास में समुदाय को भागीदारी नही पाई गई।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला में स्टॉफ के सभी सदस्यों का सामजस्य ठीक है, वे आपस में मिलजुलकर सभी कार्य कर लेते है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में अपने प्रधानाध्यापक के कार्य से संतुष्ट है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 78 प्रतिशत शिक्षकों की राय क अनुसार उनकी शाला मे विद्यार्थियों और शिक्षकों का अनुपात ठीक पाया गया,
- लेकिन 22 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार विद्यार्थी–शिक्षक का अनुपात ठीक नही है, इससे पता चलता है, कि 22 प्रतिशत शालाओं में और शिक्षकों की आवश्यकता पायी गई है।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि अधिकांश 97 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में किसी प्रकार की कोई समस्याएं नही आती है, जो छोटी–छोटी कुछ समस्याएं आती है, वे अपने स्तर पर हल कर लेते है। लेकिन केवल 3 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में समस्याएं आती है, जैसे–कुछ बच्चें शाला रोज नही आ पाते, कुछ बच्चों के अभिभावकों के द्वारा ध्यान नही दिया जाना, शिक्षकों की कमी आदि।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला कि समस्यों को दूर करने हेतु सुझाव दिये जैसे– शाला में भौतिक साधनों की व्यवस्था, शाला में शिक्षण सामग्री की व्यवस्था, अलग शौचालय की व्यवस्था, खेल सामग्री की व्यवस्था, आदि।
- इस विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि 90 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शिक्षकों को शिक्षण कार्य को संचालित करने हेतु किसी प्रकार की कोई कठिनाईयॉ नही आती है।
- लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शिक्षण को संचालित करने में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
- जैसे– शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यो मे भेजना, कहीं–कहीं अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को समय–समय पर शाला नही भेजना आदि कारणों से शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।

प्रदत्तों के विश्लेषणों से प्राप्त निष्कर्ष

- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 85 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे एक वर्ष से अधिक समय से वदस्थ थे, लेकिन 15प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे पांच वर्ष से अधिक समय से पदस्थ थे।
- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शाला 2 किमी. से अधिक दूरी पर है।
- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है,की शतप्रतिशत शिक्षक 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे शाला रोज समय पर पहूच जाते है।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, की 100प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार आधुनिक उपकरण जैसें– कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि उपकरण नही है, लेकिन अधिकांश शालाओं में रेडियों पाया गया जो केवल सूर्य नमस्कार होता है, उस दिन उसे उपयोग में लिया जाता है।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 83 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला मे शिक्षण सामग्री पर्याप्त थी,और 13 प्रशित शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला मे शिक्षण सामग्री अपर्याप्त थी लेकिन केवल 4 प्रशित शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला मे शिक्षण सामग्री पूर्णतया अभाव था।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि अधिकांश 95 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनकी शालओं मे आधुनिक उपकरण का आभाव पाया गया, केवल 5 प्रतिशत शिक्षकों ने रेडियों को ही आधुनिक उपकरण माना है जो राष्ट्रीय त्योहारों एवं सूर्यनमस्कार के लिये होता हैं।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 98 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शालाओं में बालसभा , सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, निबंध लेखन, वृक्षारोपण, महापुरूषों की जयंती मनाना, चित्रकला, कबडडी दौड़, क्रिकेट लांग जम्प, रस्सीकूद आदि खेल खिलाएं जाते है, और सिखाए भी जाते है, लेकिन शाला में एक खेल शिक्षक की कमी बताई गई।

- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला मे से किसी भी विधार्थी का चयन बडे स्तर पर नही हुआ है, लेकिन कुछ शिक्षकों का कहना है, कि प्राथमिक शालाओं में विधार्थी छोटे होते है, इसलिए विद्यालय स्तर पर ही खेल खिलवा लेते है, जैसे, कबड़डी, खो–खो, क्रिकेट, रस्सीकूद आदि।
- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में खेल के अलावा समय–समय पर कई प्रकार की गतिविधियां होती है, जैसे– सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिता, महापुरूषों की जयंती मनाना, चित्रकला, भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता आदि गतिविधियां होती है।
- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला में छात्रों के अनुपस्थित के कई कारण हो सकते है जैसे – बच्चों का आर्थिक कार्यो में लगना, घर पर छोटे भाई–बहनों की देखभाल, पालकों का मजदुरी के लिए भटकना आदि।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षक शालाओं उपलब्ध शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते है।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार अनुपस्थित छात्रों को शाला लाने हेतु प्रोत्साहित करते, छात्रों के अभिभावकों से

मिलते है, और आवश्यकता पढ़ने पर शिक्षक विद्यार्थी के घर जाकर सम्पर्क करते है।
इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार प्राथमिक शालाओं की और सरल बनाया जाये और पाठ्यपुस्तकों में उपयोग होने वाले पेजों में और सुधार कर और अच्छे पेजों का उपयोग किया जाये ताकि ग्रामीण क्षेत्रों तक पहूॅचाते– पहूॅचाते पाठ्य पुस्तक सुरक्षित रहे।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 92 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला के विकास में समुदाय की भागीदारी पाई गई, लेकिन केवल 8 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला के विकास में समुदाय की भागीदारी नही पाई गई।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला में स्टॉफ के सभी सदस्यों का सामजस्य ठीक है।
इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि शिक्षकों की राय के अनुसार वे अपने शाला के प्रधानाध्यापकों के कार्य से संतुष्ट है।
इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है, कि 78 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शालाओं में विद्यार्थी–शिक्षक का अनुपात ठीक पाया गया।
इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 97 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार उनकी शाला में किसी प्रकार की कोई समस्याएं नही आती है, और आती भी है, तो वे अपने स्तर पर हल कर लेते है। लेकिन केवल 3 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार शाला में समस्याएं आती है, जैसे किसी कारण वश बच्चें का रोज शाला नही आ पाना इससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।

- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 100 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शाला कि समस्यों को दूर करने हेतु सुझाव दिये जैसे– शाला में भौतिक साधनों की व्यवस्था, शाला में शिक्षण सामग्री की व्यवस्था, अलग शौचालय की व्यवस्था, खेल सामग्री की व्यवस्था, आदि।
- इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि 90 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शिक्षकों को शिक्षण कार्य को संचालित करने हेतु किसी प्रकार की कोई कठिनाईयॉ नही आती है।

लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षकों की राय के अनुसार शिक्षण को संचालित करने में कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता ळें

सन्दर्भः–

1. अवस्थी, राकेश (2006); स्कूल चले हम अभियान 2005 का प्राथमिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन (टीकमगढ जिले के संदर्भ में)– एम.एड. लघु शोधप्रबंध सर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
2. भटनागर, सुरेश; भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याऍ इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
3. जोशी, अल्पना (2004); प्रारंभिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण में 'पालक–शिक्षक संघ'' की भूमिका का अध्ययन करना (खण्डवा विकासखण्ड के संदर्भ में) एम.एड. लघु शोध प्रबंध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
4. माथुर, एस.एस. शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. पलाश मार्च–अप्रेल–मई 1994; राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल म.प्र. द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका
6. पाठक, पी.डी. (1995); भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऍ विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
7. शर्मा, वन्दना (2006); विगत पांच वर्षो की तुलना में वर्ष 2004–05 के जिला प्राथमिक बोर्ड परीक्षा के परिणाम प्रभावित होने के कारणों का अध्ययन(खण्डवा विकास खण्ड के संदर्भ में) एम.एड. लघु शोध प्रबंध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर।
8. श्रीवास्तव, सपना (1998); मध्य प्रदेश में सत प्रतिशत साक्षरता के लिये प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में अपव्यय व अवरोध के कारणों का निदानात्मक अध्ययन पी.एच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर।
9. सिंह आर. (2001); ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शैक्षणिक कार्यदशाओं का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पी.एच.डी. डॉ बी. आरअम्बेडकर विश्वविद्यालय।